शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

"तरूण" काव्य में इतिहास एवं विज्ञान

डॉ0 अनिता जैन
कार्यकारी प्राचार्या, हिन्दी विभाग, जे0ए0वी0जी0 डिग्री कॉलेज, बड़ौत

सारांश

कविवर तरूण भारतीय जन–मानस के प्रतिनिधि कवि है। आपकी साहित्याभिव्यक्ति में कई रोचक एवं आश्चर्यजनक तथ्य दृष्टिगोचर होते हैं। आपकी रचनायें परिपक्व एवं सीझी हुई रचनायें है, ये रोशनी की रचनायें हैं, आस्था और विश्वास की रचनायें हैं, मनुष्य के पक्ष में लिखी गई रचनायें हैं। आपकी रचनाओं में कही प्रेम और सौन्दर्य की छटा है तो कही मानव–मूल्यों का शंखनाद, कही उस अव्यक्त सत्ता के प्रति भक्ति का भाव है तो कही आधुनिक समाज एवं राजनीति का सजीव चित्रण। कही मानव मनोभावों की अभिव्यक्ति है तो कही इतिहास एवं आधुनिक विज्ञान का निरूपण। आपने अपने काव्य में स्थान–स्थान पर अनेक ऐतिहासिक घटनाओं, इतिहास–प्रसिद्ध महापुरूषों और ऐतिहासिक कथाओं का उल्लेख किया है। इस दृष्टि से आपकी 'रक्षाबन्धन', 'राष्ट्रकेसरी तिलक', 'मुक्तिपर्व', 'हे परमहंस', 'जवाहर के निधन पर', 'आज मिली माटी से माटी', 'स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती' आदि कविताएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आज जब चारों ओर विज्ञान की दुंदभी बज रही है, तब मानव और उसके विचारों पर भी विज्ञान का प्रभाव पड़ना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यही कारण है कि कविवर तरूण के काव्य में भी यत्र–तत्र हमें आधुनिक विज्ञान के कतिपय सिद्धान्तों की झलक मिल जाती है।

मुख्य शब्द–*परिपक्व, दुंदुभि, उद्धरणी, व्युत्पन्न, अतिक्रान्त, समन्वित, अक्षुण्ण, साश्रु, करूणावतंस, श्रद्धावनत, संत्रप्त, सहृदय, नैसर्गिक।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 अनिता जैन,
''"तरूण" काव्य में इतिहास एवं विज्ञान'
शोध मंथन,
सितम्बर 2017,
पेज सं0 69–78
http://anubooks.com/?page_id=581
Artcile No. 11 (SM 449)

उद्देश्य–

इतिहास और साहित्यकार दोनों ही मनुष्य जाति को सत्य के मार्ग पर ले जाते है और दोनों ही सत्य के पुजारी होते है। यही कारण है कि साहित्य के क्षेत्र में इतिहास का महत्व भारतीय और पाश्चात्य काव्य–शास्त्र में अत्यन्त प्राचीन काल से स्वीकार किया जाता रहा है। साहित्य शास्त्र के आचार्यों ने नाटक एवं महाकाव्य की रचना में ऐतिहासिक कथावस्तु के ग्रहण का बार–बार उल्लेख किया है, पर साथ ही यह भी स्पष्ट कहा है कि इतिहास की यथातथ्य उद्धरणी देना ही साहित्य नहीं है। इसी प्रकार यद्यपि साहित्य और विज्ञान दो पृथक धारायें है, फिर भी विज्ञान का प्रवेश साहित्य के अन्तर्गत भी है, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है और समाज विज्ञान से प्रभावित। अतः साहित्य में विज्ञान की चर्चा कोई आश्चर्य की बात नहीं। कविवर 'तरूण' आधुनिक जीवन बोध के कवि होने के साथ–साथ भारतीय–संस्कृति के सजग प्रहरी भी है। प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य आपके साहित्य में उपलब्ध इतिहास और विज्ञान का मूल्यांकन करना ही है।

कविवर डा0 रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' जैसे कवि युग प्रवर्तक कवि नहीं होते चिरन्तन कवि होते हैं। ये काव्य के इतिहास निर्माण में सहायक नहीं होते अपितु काव्येतिहास उनसे अतिक्रान्त हो जाता है। आप एक जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न एवं अन्तदृष्टि सम्पन्न कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं। गंभीर अध्ययन जीवन व समाज के विभिन्न जीवानुभवों से समन्वित आपकी व्युत्तपन्न कवि चेतना ने अपके काव्य में व्यक्तिमन व समाज मन का अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया है। साहित्य और इतिहास दोनों का घनिश्ठ सम्बन्ध है, क्योंकि दोनों ही सत्य की खोज में निरत है। किन्तु दोनों की कार्यप्रणाली भिन्न है। इतिहासकार, दार्शनिक और वैज्ञानिक का सत्य वस्तुनिष्ठ होता है, जबकि साहित्यकार का सत्य सत्यं, शिवं और सुन्दर से समन्वित होता है। इतिहासकार एक वैज्ञानिक की भांति तथ्यों पर उद्घाटन करता है, जबकि साहित्यकार मानवीय अनुभूतियों को साथ लेकर ही अपना कार्य करता है। इसलिये इतिहासकार का सत्य वस्तुपरक होता है और साहित्यकार का भावपरक। साहित्यकार स्थूल ऐतिहासिक रेखा जाल को व्यक्तिगत भावना, मानवीय सहानुभूति एवं रमणीय कल्पना के रंग में रंगकर स्वानुभूत सत्य की भांति शिव और सुन्दर बना देता है। इतिहासकार शिव और सुन्दर को लक्ष्य मानकर नहीं चलते। उनका सत्य यदि लोक कल्याणकारी और सुन्दर भी हो जाये तो यह उनकी दोहरी सफलता है। आधुनिक युग विज्ञान का युग है। सर्वत्र वैज्ञानिक आविष्कारों एवं अनुसंधानों की धूम मची है। नित्य नवीन आविष्कार हो रहे हैं तथा नित्य उनके प्रयोग द्वारा मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की तैयारी कर रहा है। विज्ञान ने अपने अद्भुत कार्यों द्वारा मानव को नई सभ्यता, नई संस्कृति, नये विचार, जीवन–यापन के नये–नये साधन, नये–नये अनुभव आदि प्रदान किये हैं, जिनके द्वारा वह द्रुतगति से प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन करता चला जा रहा है। आज जब सर्वत्र विज्ञान की दुंदुभी बज रही है। तब मानव और उसके विचारों पर भी विज्ञान का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। यही कारण है कि कविवर 'तरूण' के काव्य में भी हमें आधुनिक विज्ञान के कतिपय सिद्धान्तों

की झलक मिल जाती है।

विषय–प्रवेश– इतिहास यों तो प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति, संस्था, जाति, स्थान आदि सभी का हो सकता है, पर सामान्यतः 'इतिहास' शब्द से किसी भी देश के प्राचीनतम युग से लेकर वर्तमान युग तक की राष्ट्रीय, सामाजिक या सांस्कृतिक घटनाओं के क्रमबद्ध प्रवाह का लेखा ही समझा जाता है। 'इतिहास' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है– इति+ह+आस अर्थात् निश्चयपूर्वक ऐसा ही था।" यह निश्चय ठोस वास्तविकता को प्रकट करता है। इस प्रकार इतिहास में घटनात्मक तथ्यों की प्रधानता रहती है। जहाँ तक साहित्य के माध्यम से इतिहास की अभिव्यक्ति का सम्बन्ध है, तो इस विषय में हम कह सकते है कि साहित्यकार को साहित्यकार रहते हुए इतिहास का उपयोग करना चाहिये। दोनों अनेक रूपों में परस्पर सम्बद्ध है। दोनों सत्य के अन्वेषी है। इतिहासकार घटना व्यापारों का वस्तुगत तथ्य निकालता है, जबकि साहित्यकार इतिहास की टूटी हुई कडियों को अपने तर्क बल से जोड़कर उसके रिक्तांशों को अपने भाव, विचार व कल्पना से जीवन्त बनाता है।

कविवर 'तरूण' के काव्य में भी हमें यत्र–तत्र ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। सन् 1939 में रचित 'रक्षा बंधन' कविता में कवि ने रक्षाबंधन के पावन पर्व पर बहन द्वारा भाई के हाथ पर राखी बांधते समय देशभक्त वीर भाई और बहन के उद्‌गारों के माध्यम से एक ऐतिहासिक तथ्य को उद्‌घाटित किया है। एक दीन परतन्त्र देष का अभागा भाई, बहन को राखी बांधने के बदले क्या दे सकता है, इसकी चिन्ता बहन को नहीं है, क्योंकि उसके सामने इतिहास प्रसिद्ध क्षत्राणी बहनों का आदर्श है, जिसने मुगल सम्राट हुमायूँ तक को राखी भेजी थी।

"क्षत्राणी बहनों से तूने,
सीखा निश्चल रक्षाबंधन।
भारत का आदर्श अभी तक
तेरे उर में करता नर्तन।
मुगल हुमायूँ तक को तूने
रेषम की राखी भेजी थी।
धन्य–धन्य भारत की ललना
कितना सुन्दर है तेरा मन।"[2]

आजादी के दीवाने रणबांकुरे वीर महाराणा प्रताप की इतिहास प्रसिद्ध कथा को भी इस कविता में अभिव्यक्ति मिली है। महाराणा प्रताप अपनी मातृ–भूमि की रक्षा के लिये पाँच वर्ष तक भूखे–प्यासे निरन्तर अरावली की पहाड़ियों में भटकते रहे थे।[3] इस तथ्य को भी कवि ने प्रस्तुत कविता में उजागर किया है।

सन् 1957 में स्वातन्त्रय–स्तम्भ के उद्‌घाटन पर लिखी गई 'मुक्ति पर्व' कविता में कवि ने स्वतन्त्रता–संग्राम के इतिहास का आदि से अन्त तक वर्णन किया है। इसमें अमर शहीद मंगल

पांडे का अत्यन्त श्रृद्धा और सम्मान के साथ स्मरण किया गया है, जिसने सन् 1857 में पवन पुत्र की भांति भारत माता को ऐसी संजीवनी का पान कराया था कि 90 वर्ष तक उसका प्रभाव अक्षुण्ण बना रहा। जलियां वाला बाग की रक्तरंजित कहानी, रोलेट एक्ट, बंगभंग आदि के बाद स्वतन्त्रता के मुक्त पवन में सारे देश की प्रकृति का अंग–अंग प्रभाती राग गाते हुए थिरक उठने के साथ, कविहृदय भी आनन्द विभोर हो उठा। प्रस्तुत कविता में कवि ने महर्षि दधीचि के महान त्याग का स्मरण कराते हुए पं0 नेहरू, तिलक आदि देशभक्तों के आजादी के लिये किये गये बलिदानों का स्तवन अत्यन्त भावपूर्ण हृदय से किया है।[4]

ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करने के साथ–साथ कविवर 'तरूण' ने अपनी अनेक कविताओं में स्वतन्त्रता–संग्राम में सक्रिय भाग लेने वाले महापुरूषों के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन भी समर्पित किये हैं। 'महाराष्ट्र केसरी' तिलक के प्रति 'शीर्षक कविता में कवि ने अमर स्वतन्त्रता सेनानी लोकमान्य तिलक के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वतन्त्रता–संग्राम में उनके द्वारा किये गये बलिदानों की चर्चा की है। उनकी गर्जना– "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है", सुनकर इतिहास बोल उठा था– "हमें इस बाँके की दरकार है।"

आप 1857 की क्रान्ति के प्रमुख कर्णधार थे। आपके दृगों के बीच उबलते सितारों की चमक, सलोनी चाल और बांकी मूछों[6] को देखकर मान्टेग्यू भी घबरा उठा था–

"मान्टेग्यू बोला कि बड़ा ही खतरनाक यह आदमी
है इसकी आवाज की सौ सौ धनुषों की टंकार है।[6]

इसी प्रकार "जवाहर लाल नेहरू के निधन पर" कविता में कवि ने राष्ट्रनायक पं0 नेहरू के निधन पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए भारतीय स्वतन्त्रता–संग्राम में उनके योगदान और स्वतन्त्र भारत के विकास के लिये किये गये उनके प्रयासों की विस्तृत चर्चा की है। आपने अपने सद्प्रयासों से जीवन रूपी खलिहानों को मोती रूपी फसलों से भर, मानव–मन के प्याले में ज्योति के रसीले बीज बोये, मानव–जग को शरद–नक्षत्र, गगन का प्रतिरूप बनाने के लिये जन–जन को अपने दमकते हृदय रूपी रत्न का आलोक बांटा और राजमार्ग को छोड़कर जनकल्याण के लिये कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलना स्वीकार किया। ऐसे महा पुरूष के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कवि कहता है–

"मानवता के अंधकारमय पथ पर रत्नदीप सा सुन्दर,
महाअघंडों में अविचल सा जलता ज्योतिर्मान जवाहर।
उसकी पावनतम सुधियाँ निज साश्रुनयन की लिये आरती,
ओस–बिन्दु से लदी दूब–सी, चित्र भावभीनी उतारती।।[7]

सन् 1972 में रचित "गांधी शताब्दीः शरदोत्सव" कविता में कवि ने अहिंसा के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति का मूलमंत्र प्रदान करने वाले विश्ववंद्य बापू को गांधी शताब्दी के अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। कवि को शरदकालीन आकाश में फैली चांदनी, खादी और चन्द्रमा

रूपये के समान प्रतीत होता है। पेड़ों से उठने वाली पवन लहरियों की मर्मर ध्वनि, महात्मा गांधी की जय–जयकार सी करती प्रतीत होती है।[8]

कविवर 'तरूण' ने मात्र इतिहास प्रसिद्ध 'राजनेताओं' पर ही लेखनी नहीं चलायी अपितु ऐतिहासिक समाज सुधारकों और साहित्यकारों को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया है। देश में नवचेतना का विकास करने के लिये रामकृष्ण परमहंस ने अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किये। आपका विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर–शक्ति से आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त कर सकता है। "हे परमहंस" शीर्षक कविता में कवि ने उनके चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति को उसके प्रदेय की चर्चा की है।

हे चिर लोकोत्तर पुरूष, तृप्त नित पूर्ण काम।
धरती को दो अपना प्रसाद, आनन्द धाम।
संसार रच रहा आज क्रूर क्रीड़ा नृशंस।
आनन्दमयी जग–कमलवनी का हुआ ध्वंस।
दो ज्योतिकिरण, हे रामकृष्ण, हे परमहंस।
शत–शत प्रणाम हैं, तुमकों, हे करूणावतंस।[9]

इसी प्रकार 'तुलसीः युगबोध' शीर्षक कविता में कवि मुस्लिम शासकों से संतप्त हिन्दू जनता के निराश एवं भग्न–हृदयों में आशा–दीप प्रज्ज्वलित कर रामभक्ति की पावन–गंगा प्रवाहित करने वाले महाकवि तुलसीदास के प्रति श्रद्धावनत दृष्टिगोचर होते है। कवि का कहना है कि आज हमारे सामने महान संकट है, पग–पग पर राजनीतिक समस्याएं है, चीन कपट–कटारी लिये भारत–माता की साड़ी खींचने को तैयार खड़ा है, उधर पाकिस्तान भी ताक लगाये बैठा है, ऐसी स्थिति में तुलसी की मधुरवाणी ही देश में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित कर सकती है।[10]

थाईलैंड की सांस्कृतिक यात्रा पर गये कवि द्वारा बैंकाक के राष्ट्रीय म्यूजियम से निकलकर लिखी गई कविता 'हे अभिताभ' भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है, जिसमें कवि ने गौतम बुद्ध के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि यद्यपि कविवर 'तरूण' ने किसी ऐतिहासिक महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक या उपन्यास की रचना नहीं की तो भी आपका ऐतिहासिक दृष्टिकोण अत्यन्त उदात्त है। आपकी अनेक कविताओं में ऐतिहासिक पात्रों, घटनाओं, स्थितियों एवं स्थलों का सफल चित्रण हुआ है, जिसका उद्देश्य इन महापुरूषों के चरित्र और कार्यों के माध्यम से मानव मात्र को सद्मार्ग पर लाना है। आपके ऐतिहासिक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में डा0 कुंवरपाल सिंह के शब्द अत्यन्त सार्थक है– "तरूण जी इतिहास के रूथ के साथ हैं।"[11]

विज्ञान

मानव–व्यक्तित्व के दो भाग है– 'शरीर' और 'मनोजगत'। मनोजगत को हम बुद्धि और हदय इन दो भागों में बांट लेते है। बुद्धि पक्ष विचार वितर्क, विश्लेषण, दर्शन आदि से सम्बन्ध

रखता है, अतः शुष्क एवं नीरस है। हदय–पक्ष हमारे भावों एवं अनुभूतियों से अनुप्राणित है, रागात्मकता से युक्त है। मानव–व्यक्तित्व के सम्यक विकास के लिये मानव की बुद्धि और हदय की अनुभूतियों का समान विकास आवश्यक है। लेकिन आज का मानव सदियों लम्बी जीवन–यात्रा तय करके बुद्धि के उतुंग शिखर पर आसीन है। फलतः उसका जीवन मरू–प्रदेश में भटक गया है। यह यन्त्र–सभ्यता निश्चित रूप से बुद्धिजन्य विज्ञान की ही देन है।

आज विश्व का कोई भी कोना विज्ञान के प्रभाव से अछूता नहीं है। क्या धर्म, क्या समाज, क्या व्यक्ति और क्या उनके विचार, सभी पर विज्ञान का कुछ न कुछ प्रभाव निश्चित रूप से पड़ा है, तो साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। कविवर 'तरूण' के काव्य में भी हमें यत्र–तत्र आधुनिक विज्ञान के कतिपय सिद्धान्तों की झलक मिल जाती है।

सन् 1975 में नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली द्वारा प्रकाशित आपके 'आंधी और चांदनी' शीर्षक काव्य–ग्रंथ में आपके वैज्ञानिक भाव–बोध की सफल अभिव्यक्ति हुई है। कवि का यह विज्ञान बोध विभिन्न वैज्ञानिक तथ्यों, दर्शनों, औद्योगिक परिवेश आदि से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अनुप्राणित हुआ है। जैसा कि निम्न विवेचन से स्पष्ट है। पदार्थ विज्ञान का एक सामान्य तथ्य यह है कि समस्त तरल पदार्थों का ऊपरी तल समतल होता है। इस सिद्धान्त से प्रेरित होकर कवि ने 'अंधेरा' शीर्षक कविता में कबि ने अंधेरे के समता के गुण को उजागर करने के लिये 'जल–सतह' का उपमान प्रयुक्त किया है–

'जल–सतह–सा यह अंधेरा है बड़ा समतल,
इस अंधेरे में न होता भेद और प्रभेद।।'[12]

वैज्ञानिक–अनुसंधानों द्वारा यह पता लगाया गया है कि सृष्टि का विकास परमाणुओं द्वारा हुआ है। प्रत्येक अणु में कितने ही परमाणु होते है जैसे मंड 'स्टार्च' के एक अणु में लगभग 25000 परमाणु होते है। इन छोटे से परमाणुओं में अपार शक्ति होती है।[13]

कविवर तरूण ने पदार्थ–विज्ञान के इस तथ्य का आश्रय ग्रहण कर इस अपार सृष्टि की तुलना में मानव की अस्तित्वहीनता की ओर संकेत करते हुए लिखा है–

"विराट सृष्टि के अणु की सृष्टि का मैं अणु।"[14]

आधुनिक विज्ञान ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि "सृष्टि का कोई भी पदार्थ अगतिमय नहीं है, क्योंकि इस सृष्टि में अनन्त विश्व हैं, जिनमें से प्रत्येक में अनन्त ब्रह्मांड है। कोई भी ब्रहमांड स्थिर नहीं है। अतः संसार में कहीं भी स्थिरता नहीं है, सभी निरन्तर गतिशील है।"[15]

कविवर 'तरूण ने भी संसार को गतिशील एवं परिवर्तनशील माना है। कवि का विश्वास है कि परिवर्तन में ही विकास है, नाश में ही नवसृजन के बीज छिपे है–

"परिवर्तन के प्रबल चक्र में विश्व दौड़ता जाता।
आज धूल में खिला फूल कल पुनः धूल बन जाता।।
बनते हैं साम्राज्य यहाँ रज से उठ रज में मिलने।

गल जाता है बीज यहाँ कल फिर गुलाब हो खिलने।।"[16]

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डारविन ने तीन प्रमुख सिद्धान्तों की ओर संकेत किया है, जिनमें से एक सिद्धान्त यह है कि अपने–अपने जीवन को सुस्थिर बनाने के लिये सदैव संघर्ष चलता रहता है। उस संघर्ष में वे ही जीवित रहते है, जो दृढ़ता के साथ इस जीवन के द्वन्द्व मे डटे रहते है।"[17]

डारविन के इस सिद्धान्त का संकेत भी हमें आपकी कविताओं में प्राप्त होता है। "संघर्ष कर आहें न भर" शीर्षक गीत में कवि कहते हैं–

"वंशी पटक हे धनुर्धर
जीवन भयंकर है समर।
गांडीव तू अपना उठा,
जीवित तुझे रहना अगर। संघर्ष कर आहें न भर।[18]

फ्रायडवाद उन वैज्ञानिक दर्शनों में से है, जिसनें आधुनिक काल के लगभग प्रत्येक कवि और उसके काव्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है। कविवर 'तरूण की आदमी' कविता पर फ्रायडवाद का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। सिंगमन फ्रायड के अनुसार सभी वृतियों का केन्द्र है, जो मनुष्य से हजारों पाप करता है। इसी तथ्य को कवि ने निम्न पंक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है–

"मांस का एक अदद लोथड़ा,
आगे जिसके धधकता है––फ्रायड का काम कार्यालय
सैक्स सेक्रेटिरिएट।" [19]

डारविन के विकासवाद के सिद्धान्त के अनुसार आज का मानव प्राचीन वन–मानुष और बन्दर का ही विकसित रूप है। इस तथ्य को भी कवि ने 'आदमी' कविता में वाणी प्रदान की है–

"मांस का एक अदद लोथड़ा,
जिसके पीछे की पूंछ कही खिर गई है,
शताब्दियों तक चलते–चलते रगड़ खाते,
यह बीसवीं सदी का आदमी,
डार्विन का जीवित वनमानुस। [20]

वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव–जीवन और जगत की व्यवस्था को पूर्णतया परिवर्तित कर दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे चारों ओर का ग्रामीण व प्राकृतिक परिवेश युगीन यांत्रिक परिवेश में परिवर्तित होता जा रहा है– 'दीप के तले छिद्र में कविता कवि वैज्ञानिक उपलब्धियों का यशेगाान करते हुए कहता है–

"राकेट से हमने यह अनन्त नभ चीर लिया,
बिजली के पंखे में है बन्द समीर किया,
कर लिया काल को कैद घड़ी के डायल में,

रेडियों बना पाया वाणी पर स्वाधिकार।
दी बांध बल्ब में ज्योति सूर्य, शशि तारों की,
रे धन्य मनुज की बुद्धि, बुद्धि का चमत्कार।[21]

वैज्ञानिक प्रभाव की अभिव्यक्ति की दृष्टि से कवि की 'कैमरा' कविता भी उल्लेखनीय है, जिसमें कवि कैमरे की कार्यप्रणाली से पूर्णतया परिचित प्रतीत होता है–

'केवल एक कैमरा,
पावरफुल लैंस का मै साथ लाया हूँ–बस
व्हाइट कॉलर्स इनमें आते है,
कौए की चोंच जैसे–
क्लिक।[22]

इसी प्रकार 'यह हठीला बिम्ब' कविता में कवि ने वायुयान के समुद्र के किनारे उतरने का अत्यन्त कलात्मक बिम्ब प्रस्तुत किया है। विज्ञान ने औषधि और शल्य–चिकित्सा के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग करके मानव को अनेक असाध्य रोगों से मुक्त किया है। "कोकीन का इंजेक्शन' लगाकर डाक्टर ने उसके गले की गिल्टियाँ काट दी और इसे लेश–मात्र भी दर्द का अहसान नहीं हुआ।[23]

वर्तमान औद्योगिक क्रान्ति ने आर्थिक विषमता को जन्म दिया है। सम्पत्ति का केन्द्र मिल मालिक बन गये है और मजदूर वर्ग इस प्रकार की अर्थव्यवस्था से असन्तुष्ट होकर अपने भीतर ही भीतर असंतोष और संत्रास का अनुभव कर रहा है। निरन्तर बढ़ती हुई यान्त्रिकता मानव की मानवता को नष्ट कर रही है और मानवता के अभाव में मनुष्य सुखी कैसे रह सकता है। कवि का यह दर्द प्रत्येक संवेदनशील हदय का दर्द है।

"विज्ञान जगा हो गये सभी मतवाले,
जग गई बुद्धि, पड़ गये हदय पर ताले,
धन के भूखे पाशाण हुए नर नारी,
जीवन में अब भावुकता शेष नहीं है।
अब मानव में मानवता शेष नही है।[24]

आज बौद्धिकता की मोहमयी व अनियंत्रित बाढ़ में मनुष्य अपनी नैसर्गिक सहदयता खोता जा रहा है। इसलिये कवि ने इस दुर्योग से सावधान रहने की चेतावनी दी है।

"हम सब साधन सम्पन्न किन्तु मन चिर दरिद्र।
रे कहाँ रहेगा तेल दीप के तले छिद्र।
हो रही सभ्यता आजघड़ा शिव–मन्दिर का,
रे बूंद–बूंद कर बहा जा रहा रस अपार।"[25]

आज वैज्ञानिक प्रगति ने मानव के सामने अनेक प्रश्न चिह्न खड़े किये है। यंत्रों का दास–मानव आज विनाशकारी बम, अणुबम मिसाइलस एवं बड़े–बड़े टैंकों को देखकर अपने अस्तित्व के प्रति संदेहशील हो उठा है। ऐसी स्थिति में कवि की चिन्ता जलते हुए संसार का शीतल उपचार करने की है।

प्यार करो, प्यार करो,
अणुबम से जलता जग, शीतल उपचार करो।"[26]

आधुनिक यांत्रिक परिवेश से प्रभावित होकर कवि ने अनेक वैज्ञानिक उपमाानों का भी अपनी कविताओं में सफल प्रयोग किया है जैसे– "अंधकार में कार की चकमती सर्चलाइट सा अस्तित्व का केन्द्र–पेट"[27] आधुनिक वैज्ञानिक यांत्रिक परिवेश कवि की 'आम–आदमी की अकादमी" शीर्षक कविता में साकार हो उठा है–

"खड्डे खुचरों वाली सड़क पर धड़धड़ाते जाते
ट्रक तीखे हार्न बजाते,
भोंपू लाउडस्पीकरों के ऐलान,
सभा सोसायटी दवा लाटरी के लिये
स्टील के रेलिंग, लोहे, लक्कड़, सरिये का होता खनाखन गान
टीन के चद्दरों के लोडिंग, अनलोडिंग का चलता अभियान।
सब कुछ है, मानो आंख और कान की दावत का पूरा सामान।[28]

निष्कर्षत– हम कह सकते है कि 'तरूण' का काव्य मात्र आधुनिक बोध का काव्य नहीं है, अपितु आधुनिक विज्ञान बोध का भी काव्य है। आपकी कविताओं में जहाँ एक ओर अनेक वैज्ञानिक सिद्धान्तों और नित नूतन आविष्कारों का प्रतिपादन हुआ है, वहाँ दूसरी और विज्ञान के विकृत रूप की चर्चा भी हुई है और इससे भी आगे अपनी संवेदनशीलता के कारण कवि ने अपनी अनेक कविताओं मैं मानव को वैज्ञानिक यंत्रणा से मुक्त करने तथा उसकी नियति का मंगल–विधान करने का भी प्रयत्न किया है।

संदर्भ सूची–

1– तरूण– जयशंकर 'प्रसाद वस्तु और कला'– 179
2– कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' पृष्ठ 348
3–4 कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 348 व 378 से 381
5– कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 371–372
6– कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 372
7– कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 393
8– कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 395
9– कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 385

10— *कविवर तरूण, 'तरूण काव्य ग्रंथावली' 391*
11— *डा0 कुंवरपाल सिंह, 'अखंड काव्य साधना' पृष्ठ 53 पर संग्रहीत।*
12— *डा0 तरूण, 'आंधी और चांदनी', पृष्ठ 4*
13— *डा0 रामदास गौडा, विज्ञान हस्तामलक, पृष्ठ 291—92*
14— *डा0 तरूण, 'आंधी और चांदनी', पृष्ठ 8*
15— *डा0 रामदास गौडे, 'विज्ञान हस्तामलक' पृष्ठ 291, 92*
16— *डा0 तरूण 'ग्रन्थावली' पृष्ठ 114*
17— *डा0 रामदास गौड, विज्ञान हस्तामलक पृष्ठ 166*
18— *तरूण नवहिंमाचला पृष्ठ 64*
19— *तरूण, 'आंधी और चाँदनी' पृष्ठ 10*
20— *तरूण 'आंधी और चाँदनी' पृष्ठ 10*
21— *तरूण 'आंधी और चाँदनी' पृष्ठ 136*
22— *तरूण 'आंधी और चाँदनी' पृष्ठ 16—17*
23— *तरूण 'खूनी फूल पर से गुजरते हुए' पृष्ठ 57—58*
24— *तरूण 'तरूण काव्य ग्रंथावली' पृष्ठ 360*
25— *तरूण 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 136*
26— *तरूण 'तरूण काव्य ग्रंथावली' पृष्ठ 96*
27— *तरूण 'आंधी और चांदनी' पृष्ठ 10*
28— *तरूण 'खूनी फुल से गुजरते हुए' पृष्ठ 23*